SJIF 2014 = 3.189
ISSN: 2348-3083
An International Peer Reviewed & Referred
SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL FOR
HUMANITY SCIENCE & ENGLISH LANGUAGE

सीनियर सैकण्डरी स्कूलों के आवासीय एवं गैर-आवासीय विद्यार्थियों के शैक्षिक तनाव का तुलनात्मक अध्ययन

निर्देशक

बिलोश देवी

(एम.एड्. पी.एच.डी. शिक्षा)

Asst. Professor

अरावली शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय

कारोता, नारनौल, हरियाणा।

शोधार्थी

लीलावती-१४०१०७५५४२

सिंघानिया विश्व

विद्यालय पचेरी बड़ी

झुन्झुनु, राज०.

Abstract

तनाव व्यक्ति के लिये एक ऐसी आंतरिक या बाहरी स्थिति है जो एसके सामान्य व्यवहार को प्रभावित करती है और व्यक्ति को उसका सामना काने के लिए प्रेरित और बाध्य करती है। किन्ही कारणों से व्यक्ति इन स्थितियों का सामना नहीं कर पाता है तो तनाव होता है। प्रस्तुत अध्ययन में सीनियर सैकण्डरी स्कूलों के आवासीय एवं गैर-आवासीय विद्यार्थियों के शैक्षिक तनाव का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। जिसमें प्रतिदर्श हेतु, हरियाणा राज्य के महेन्द्रगडढ़ जिले के २०० विद्यार्थियों को शामिल किया गया। इन २०० विद्यार्थियों में से सौ आवासीय - ५० लड़के और ५० लड़कियां - है और सौ गैर-आवासीय - ५० लड़के और ५० लड़कियां - है। विद्यार्थियों के शैक्षिक तनाव को मापने के लिए आभारानी बिष्टु, १९८७ द्वारा निर्मित शैक्षिक तनाव अनुसूचित का प्रयोग किया गया।

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना

शिक्षा विकास के लिए सीढ़ी का कार्य करती है। यह अन्धकार नष्ट करके प्रकाश का उदगम करती है। शिक्षा रूपी यन्त्र के द्वारा ही मनुष्य मानव बनता है अन्यथा वह पशु ही बना रहता है। शिक्षा उतनी ही पुरानी है जितनी मानव जाति। यह सभी प्रकार के मानव संसाधनों के विकास का आधार है। आज पूरी दुनिया का मानना है कि यह ज्ञान का प्रवेश द्वार एवं आन्तरिक वृद्धि व विकास की कभी न खत्म होने वाली प्रक्रिया है। प्रत्येक देश शिक्षाको विकसित करने के लिये अपनी अलग प्रणाली अपनाता है। किसी भी देश की राष्ट्रीय समृद्धि एवं कल्याण का सारा श्रेय उस देश की शिक्षा व्यवस्था को ही जाता है। पुराने समय में भारतवर्ष में बहुत कम लोग ही औपचारिक शिक्षा प्राप्त का पाते थे, इसलिए विद्यार्थियों के लिये गुरूकुल ही पर्यात्म थे। किन्तु आज ज्ञान व जन्संख्या के विस्फोट क कारण शिक्षा की मांग बढ़ गयी है हर व्यक्ति शिक्षा प्राप्त करना चाहता है। इस हेतु स्कूलनों एवं कॉलिजों में औपचारिक शिक्षा प्रदान कीजा रही है। आधुनिक समाज की मांग को पूरा करना सरकार के लिए संभव नहीं है। विद्यार्थी अपनी स्कूली शिक्षा कोपूरा करके व्यावसायिक कोर्स करना चाहते हैं परन्तु उनके शहर में उस कोर्स से सम्बन्धित कालेज नही है तो वह दूसरे शहर में अपने घर से दूर रहने के लिये मजबूर हो जाते हैं। यहॉ तक की माता-पिता भी उच्च शिक्षा के लिये बच्चों को घर से दूर भेज देते हैं। अतः ऐसे विद्यार्थी जिन्हे अपने घरों के पास शैक्षिक सुविधाऐं प्राप्त ना होने के कारण कालेज कैम्पस में रहना पड़ता है, वे आवसीय विद्यार्थी कहलाते हैं। ऐसे विद्यार्थी जो अपने घरों में रहते हुऐ निरन्तर और नियमित रूप से अध्ययन के लिये कालेज आते हैं वे गैर-आवासीय विद्यार्थी कहलाते हैं।

तनाव (Stress)

तनाव व्सक्ति के लिये एकऐसी आंतरिक या बाहरी स्थिति है जो उसके सामान्य व्यवहार को प्रभावित करती है और व्यक्ति को उसका सामना करने के लिए प्रेरित और बाध्य करती है। किन्ही कारणों से व्यक्ति इन स्थितियों का सामना नहीं कर पाता है तो तनाव होता है। आधुनिक जीवन में पाये जाने वाले तनाव का वर्णन, भारतीय सभ्यता तथा परमरा के ग्रंथो जैसे चरक संहिता, तथा भगवत गीता में आसानी से नहीं पाया जाता। तनाव से सम्बन्धित अनगिनत पहलुओं का भारतीय दार्शनिको द्वारा वर्णन भी किया गया है, वे हैं- दुःख, क्लेश, काम, तृष्णा तथा अंहकार। आयुर्वेद में तनाव का कारण शरीर तथा मन के मध्य पाये जाने वाले असंतुलन को बताया गया है। आधुनिक संसार जिसे प्राप्तियों का संसार कहा जाता है, दुःखों का विश्व भी है। प्रत्येक प्राणी को तनाव प्राप्त होता है, चाहे व परिवार में हो, व्यापार में, लेन देन में हो या किसी अन्य समाजिक-आर्थिक गतिविधि में। जन्म से लेकर मृत्यु तक एक व्यक्ति को असंख्य तनाव से युक्त अवस्थाओ से गुजरना पड़ता है। इसलिए यह हैरानीजनक बात नहीं है कि वर्तमान शताब्दी में उन्नति के साथ साथ तनाव में भी वृद्धि हो रही है, जिसे 'उत्कंठा एवं तनाव की आयु' के नाम से भी जाना जाता है। लेजारस के अनुसार-''तनाव एक व्यक्ति तथा वातावरण के बीच द्वेष पैदा करने वाला तत्व है। जिसमें व्यक्ति को अपने साधनों का बढ़ाने के लिए तथा कठिन रास्ताके से सहयोग प्राप्त करने के लिए संघर्ष करना पड़ता है।'' डा० एम. के. मुछाल के अनुसार- ''प्रतिकूल परिस्थितियॉ भी तनाव उत्पन करती हैं।'' रोजन एवं ग्रेगरी के अनुसार -''तनाव एक ऐसी आन्तरिक व बाह्य अत्तेजनात्मक अनिष्ठकारी स्थिति है जिसका समायोजन करना कठिन है।'' शिक्षा के क्षेत्र में आने वाली बाधाओं या शिक्षा के द्वारा विद्यार्थियों में जो तनाव उत्पन्न होता ह उसे शैक्षिक तनाव कहा जाता है।

उद्देश्य (OBJECTIVES)

१. बी. एड़ के आवासीय विद्यार्थियों के शैक्षिक तनाव का अध्ययन करना ।

२. बी. एड़ के गैर-आवासीय विद्यार्थियों के शैक्षिक तनाव का अध्ययन करना ।

३. बी. एड़ के आवासीय एवं गैरा-आवासीय विद्यार्थियों के शैक्षिक तनाव की तुलना करना।

परिकल्पनाएं (HYPOTHESIS)

भ१ बी. एड़ के आवासीय लड़को एवं लड़कियों के शैक्षिक तनाव में कोई सार्थक अंतर नही है।

भ२ बी. एड़ के गैर-आवासीय लड़को एवं लड़कियों के शैक्षिक तनाव में कोई सार्थक अंतर नही है।

भ३ बी. एड़ के आवासीय लड़को एवं गैर-आवासीय लड़कों के शैक्षिक तनाव में कोई सार्थक अंतर नही है।

भ४ बी. एड़ के आवासीय लड़कियों एवं गैर-आवासीय लड़कियों के शैक्षिक तनाव में कोई सार्थक अंतर नही है।

भ५ बी. एड़ के आवासीय एवं गैर-आवासीय विद्यार्थियों के शैक्षिक तनाव में कोई सार्थक अंतर नही है।

अध्ययन की विधि (METHOD OF THE STUDY)

इस अध्ययन की प्रकृति एवं उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुये अनुसंधान की ‘‘सर्वेक्षण विधि’’ का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या एवं प्रतिदर्श (POPULATION AND SAMPLE)

प्रस्तुत अध्ययन की जनसंख्या हरियाणा राज्य के महेन्द्रगढ़ जिले के यदुवंशी शिक्षा निकेतन एवं ए. एस. डी. नारनौल विद्यालय के ११ वीं कक्षा के विद्यार्थियों को चुना गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रतिदर्श हेतू २००

विद्यार्थियों को शामिल किया जायेगा। इन २०० विद्यार्थियों में से १०० आवासीय ''५० लड़के एवं ५० लड़कियां'' हैं और १०० गैर-आवासीय ''५० लड़के एवं ५० लड़कियां'' हैं।

प्रतिदर्शचयन विधि (SAMPLING METHOD)

अध्ययन के उद्देश्यों तथा प्रतिदर्श की साध्यता एवं व्यावहारिकता को ध्यान में रखते हुये प्रतिदर्श चयन के लिये उपयुक्त प्रतिदर्शचयन विधि का प्रयोग किया गया है।

प्रयोगिक उपकरण (TOOLS USED)

विद्यार्थियों के शैक्षिक तनाव को मापने के लिए आभारानी बिष्ट द्वारा निर्मित शैक्षिक अनुसूचि का प्रयोग किया गया।

परिणाम (RESULTS)

तालिका - १

बी. एड के आवासीय लड़को और आवासीय लड़कियों के शैक्षिक तनाव के आंकड़ों के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा जश मान को प्रदर्शित करती तालिका।

समूह	N	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	t' का मान
आवासीय लड़के	५०	१३८	२२	०.२१७
आवासीय लड़कियां	५०	१३७	२४	'अ.सा.' असार्थक

तालिका - २

बी. एड के गैर-आवासीय लड़को और गैर-आवासीय लड़कियों के शैक्षिक तनाव के आंकड़ों के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा जश मान को प्रदर्शित करती तालिका।

समूह	N	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	t' का मान
गैर-आवासीय लड़के	५०	१२५	२१	०.५६१
गैर-आवासीय लड़कियां	५०	१३०	१२	'अ.सा.' असार्थक

तालिका - ३

बी. एड् के आवासीय लड़को और गैर-आवासीय लड़कों के शैक्षिक तनाव के आंकड़ों के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा जश् मान को प्रदर्शित करती तालिका।

समूह	**N**	**मध्यमान**	**प्रमाणिक विचलन**	**t' का मान**
आवासीय लड़के	५०	१३८	२२	३.०२२
गैर-आवासीय लड़के	५०	१२५	२१	'०.०१ स्तर पर सार्थक'

तालिका - ४

बी. एड् के आवासीय लड़कियों और गैर-आवासीय लड़कियों के शैक्षिक तनाव के आंकड़ों के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा जश् मान को प्रदर्शित करती तालिका।

समूह	**N**	**मध्यमान**	**प्रमाणिक विचलन**	**t' का मान**
आवासीय लड़कियां	५०	१३७	२४	१.८४
गैर-आवासीय लड़कियां	५०	१३०	१२	'अ.सा.' असार्थक

तालिका - ५

बी. एड् के आवासीय विद्यार्थियों और गैर-आवासीय विद्यार्थियों के शैक्षिक तनाव के आंकड़ों के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा जश् मान को प्रदर्शित करती तालिका।

समूह	N	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	t' का मान
आवासीय विद्यार्थी	१००	१३७.५	२१	३.६१
गैर-आवासीय विद्यार्थी	१००	१२७.५	१८	'०.०१ स्तर पर सार्थक'

विवेचन ;DISCUSSION

तालिका-१ दर्शाती है कि आवासीय लड़को तथा आवासीय लड़कियों के शैक्षिक तनाव अंको का मध्यमान क्रमशः १३८ एवं १३७, प्रमाणिक विचलन क्रमशः २२ एवं २४ तथा जर का मान ०.२१७ है जो दोनों स्तर ०.०५ और ०.०१ पर असार्थक है। इसलिए हमारी परिकल्पना भ१ आवासीय लड़को एवं लड़कियों के शैक्षिक तनाव में कोई सार्थक अंतर नही है, को स्वीकार किया गया है।

तालिका-२ दर्शाती है कि गैर-आवासीय लड़को एवं गैर-आवासीय लड़कियों के शैक्षिक तनाव अंको का मध्यमान क्रमशः १२५ एवं १३०, प्रमाणिक विचलन क्रमशः २१ एवं १२ तथा जर का मान ०.५६१ है जो दोनों स्तर ०.०५ और ०.०१ पर असार्थक है। इसलिए हमारी परिकल्पना भ२ गैर-आवासीय लड़को एवं गैर-आवासीय लड़कियों के शैक्षिक तनाव में कोई सार्थक अंतर नही है, को स्वीकार किया गया है।

तालिका-३ दर्शाती है कि आवासीय लड़को अरैर गैर-आवासीय लड़कों के शैक्षिक तनाव अंको का मध्यमान क्रमशः १३८ एवं १२५, प्रमाणिक विचलन क्रमशः २२ एवं २१ तथा जर का मान ३.०२२ है जो दोनों स्तर ०.०१ सार्थक है। इसलिए हमारी परिकल्पना भ३ आवासीय लड़को एवं गैर-आवासीय लड़कों के शैक्षिक तनाव में कोई सार्थक अंतर नही है, को स्वीकार किया गया है। अर्थात गैर-आवासीय लड़कों की तुलना में आवासीय लड़के ज्यादा शैक्षिक तनाव का सामना करते है।

तालिका-४ दर्शाती है कि आवासीय लड़कियों और गैर-आवासीय लड़कियों के शैक्षिक तनाव अंको का मध्यमान क्रमशः १३७ एवं १३०, प्रमाणिक विचलन

क्रमशः २४ एवं १२ तथा जः का मान १.८४ है जो दोनों स्तरों ०.०५ और ०.०१ पर असार्थक है। इसलिए हमारी परिकल्पना भ्४ आवासीय लड़कियों एवं गैर-आवासीय लड़कियों के शैक्षिक तनाव में कोई सार्थक अंतर नही है, को स्वीकार किया गया है।

तालिका-५ दर्शाती है कि आवासीय विद्यार्थियों और गैर-आवासीय विद्यार्थियों के शैक्षिक तनाव अंको का मध्यमान क्रमशः १३७.५ एवं १२७.५, प्रमाणिक विचलन क्रमशः २१ एवं १८ तथा जः का मान ३६१ है जो स्तर ०.०१ सार्थक है। इसलिए हमारी परिकल्पना भ्५ आवासीय विद्यार्थियों एवं गैर-आवासीय विद्यार्थियों के शैक्षिक तनाव में कोई सार्थक अंतर नही है, को स्वीकार किया गया है। अर्थात गैर-आवासीय विद्यार्थियों की तुलना में आवसीय विद्यार्थियों पर ज्यादा शैक्षिक तनाव है।

निष्कर्ष ;CNCLUSION)

उपरोक्त चर्चा के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुॅचते है कि गैर-आवासीय विद्यार्थियों की तुलना में आवासीय विद्यार्थियों पर ज्यादा शैक्षिक तनाव पाया गया है।

सन्दर्भ

Bector, R (1995) Academic stress and its correlates : A comparative study of government and public school children. Dissertation in Science (Home Science) in Child development, Punjab University, Chandigarh.

Bisht, A,R (1980), Interactive effect of school climate and need for academic achievement on the Academic stress of student. Education, Almora constituent college, Kumon University.

Bisht, A, R. (1987), Bisht battery of stress scales. National psychological corporation Agra.